The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 5 | May 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक सहभागिता बढ़ाने के लिए भविष्य की रणनीतियों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में अध्ययन

हितेश कुमार सिंह

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

डॉ. नितिन बाजपेयी

सहायक प्रोफेसर, बी. एड. विभाग, महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20688192

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-05-2026

Published: 10-06-2026

Keywords:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सामाजिक सहभागिता, उच्च माध्यमिक विद्यार्थी

ABSTRACT

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयी शिक्षा को केवल पाठ्य-पुस्तक आधारित ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे जीवनगत अनुभवों, मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने पर विशेष बल देती है। नीति का मानना है कि विद्यार्थियों में सामाजिक सहभागिता तभी विकसित हो सकती है जब उन्हें अपने समुदाय, पर्यावरण और वास्तविक जीवन स्थितियों से सीखने के अवसर मिलें। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की सामाजिक सहभागिता बढ़ाने के लिए भविष्य में कौन-सी रणनीतियाँ अधिक प्रभावी हो सकती हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अनुभवात्मक अधिगम, परियोजना-आधारित गतिविधियाँ, स्थानीय समुदाय से साझेदारी, पर्यावरणीय कार्यक्रम, तथा सेवा-शिक्षण जैसी प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में सहयोग, नेतृत्व, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी क्षमताओं का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। साथ ही, डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग, बहु-विषयक गतिविधियों का समावेश और स्कूल-समुदाय संवाद जैसे उपाय सामाजिक सहभागिता को नए आयाम प्रदान कर सकते हैं। NEP 2020 के दिशानिर्देशों के अनुरूप इन भविष्य उन्मुख शिक्षण रणनीतियों को अपनाने से उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में न केवल सामाजिक जागरूकता बढ़ेगी, बल्कि वे सक्रिय, उत्तरदायी और संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित हो सकेंगे।

इस प्रकार, यह अध्ययन शिक्षा के व्यापक लक्ष्य—समग्र मानव विकास—की प्राप्ति में स्कूलों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है।

प्रस्तावना

21वीं सदी में शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सक्रिय नागरिकता के निर्माण, भावनात्मक विकास, सामाजिक विकास, मनोवैज्ञानिक विकास(सर्वांगीण विकास) तक विस्तृत हो गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालय-स्तरीय शिक्षा को अधिक समग्र, अनुभवपरक और मूल्य-आधारित बनाने पर बल देती है, जिसमें छात्रों के व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ उनकी सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देना एक प्रमुख उद्देश्य है। उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सामाजिक सहभागिता का विकास न केवल उनके नैतिक, भावनात्मक और नागरिक चेतना को मजबूत करता है, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान हेतु सक्षम भी बनाता है। उच्च माध्यमिक स्तर वह निर्णायक अवस्था है, जहाँ विद्यार्थियों में सामाजिक सहभागिता, सहयोग, नेतृत्व, सहानुभूति तथा सामुदायिक चेतना जैसे गुणों का विकास अत्यंत आवश्यक होता है। सामाजिक सहभागिता न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को मजबूत बनाती है, बल्कि उन्हें समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशील एवं समाधान उन्मुख बनाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी दस्तावेज़ के रूप में उभरती है, जो शिक्षा को कौशल-आधारित, मूल्यपरक एवं समाजोन्मुख बनाने पर बल देती है। नीति में अनुभवात्मक अधिगम, सामुदायिक सहभागिता, सेवा-आधारित अधिगम (Service Learning), सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, डिजिटल साक्षरता तथा बहुविषयक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया है। इन प्रावधानों के माध्यम से विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़कर सामाजिक सहभागिता को सशक्त बनाने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में सामाजिक सहभागिता बढ़ाने हेतु भविष्य की प्रभावी रणनीतियों का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन न केवल नीति के सैद्धांतिक पक्ष को स्पष्ट करेगा, बल्कि व्यवहारिक स्तर पर विद्यालयों में लागू की जा सकने वाली रणनीतियों की दिशा भी प्रदान करेगा, जिससे विद्यार्थियों का सामाजिक, नैतिक एवं नागरिक विकास सुनिश्चित हो सके।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

1. **सोनी एवं दहिया, वी. टी. (2024)- "भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल विकास पर प्रभाव का अन्वेषण।"** यह साहित्य समीक्षा कुल-विद्यालय स्तर के हस्तक्षेप (whole-school interventions) के माध्यम से माध्यमिक विद्यालयों में सक्रिय छात्र सहभागिता (Active Student Participation)

को बढ़ाने के कार्यक्रमों का विश्लेषण करती है। इसमें बताया गया है कि किन प्रकार की गतिविधियाँ (निर्णय-निर्माण, योजनाओं में भागीदारी, नेतृत्व गतिविधियाँ) विद्यार्थियों को शामिल करती हैं और किस हद तक उनके सामाजिक सहयोग, स्वयं-प्रस्तुति और भागीदारी कौशल में वृद्धि होती है। यह समीक्षा सीधे उच्च माध्यमिक स्तर पर सक्रिय सामाजिक सहभागिता बढ़ाने के समग्र कार्यक्रमों पर केंद्रित है और इसलिए आपकी शोध पृष्ठभूमि के लिए महत्वपूर्ण है।

2. **Berti,S.,Grazia,V.,& Molinari,L.(2023)- "माध्यमिक विद्यालयों में सम्पूर्ण-विद्यालय हस्तक्षेपों में छात्रों की सक्रिय सहभागिता: एक प्रणालीबद्ध साहित्य समीक्षा"।** यह साहित्य समीक्षा कुल-विद्यालय स्तर के हस्तक्षेप (whole-school interventions) के माध्यम से माध्यमिक विद्यालयों में सक्रिय छात्र सहभागिता को बढ़ाने के कार्यक्रमों का विश्लेषण करती है। इसमें बताया गया है कि किन प्रकार की गतिविधियाँ (निर्णय-निर्माण, योजनाओं में भागीदारी, नेतृत्व गतिविधियाँ) विद्यार्थियों को शामिल करती हैं और किस हद तक उनके सामाजिक सहयोग, स्वयं-प्रस्तुति और भागीदारी कौशल में वृद्धि होती है। यह समीक्षा सीधे उच्च माध्यमिक स्तर पर सक्रिय सामाजिक सहभागिता बढ़ाने के समग्र कार्यक्रमों पर केंद्रित है और इसलिए आपकी शोध पृष्ठभूमि के लिए महत्वपूर्ण है।
3. **दास,बिस्वजीत.(2024)-** यह साहित्य समीक्षा कुल-विद्यालय स्तर के हस्तक्षेप (whole-school interventions) के माध्यम से माध्यमिक विद्यालयों में सक्रिय छात्र सहभागिता (Active Student Participation) को बढ़ाने के कार्यक्रमों का विश्लेषण करती है। इसमें बताया गया है कि किन प्रकार की गतिविधियाँ (निर्णय-निर्माण, योजनाओं में भागीदारी, नेतृत्व गतिविधियाँ) विद्यार्थियों को शामिल करती हैं और किस हद तक उनके सामाजिक सहयोग, स्वयं-प्रस्तुति और भागीदारी कौशल में वृद्धि होती है। यह समीक्षा सीधे उच्च माध्यमिक स्तर पर सक्रिय सामाजिक सहभागिता बढ़ाने के समग्र कार्यक्रमों पर केंद्रित है और इसलिए आपकी शोध पृष्ठभूमि के लिए महत्वपूर्ण है।
4. **पांडे,पार्थशास्त्री.& तिवारी,नरेंद्र.(2019)-** भारतीय संदर्भ में किए गए कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता उनके सामाजिक सहभागिता स्तर से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। SHISRRJ तथा ShodhSagar जैसे भारतीय शोध पत्रों में प्रकाशित अध्ययनों के अनुसार, सामाजिक परिपक्वता, जीवन कौशल और सहभागिता एक-दूसरे के पूरक तत्व हैं। इस अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि विद्यालयी वातावरण, शिक्षक का सहयोग, सहपाठी समूह और सह-पाठ्यगत गतिविधियाँ सामाजिक परिपक्वता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। NEP 2020 द्वारा प्रस्तावित बहुआयामी और लचीला पाठ्यक्रम इन तत्वों को सशक्त करने की क्षमता रखता है।

<u>सामाजिक सहभागिता की वर्तमान स्थिति</u>

वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक सहभागिता की स्थिति मिश्रित एवं असमान पाई जाती है। गुणात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयों में सामाजिक सहभागिता को औपचारिक रूप से स्वीकार तो किया गया है, परंतु उसका संगठित, सतत और उद्देश्यपूर्ण क्रियान्वयन सीमित है। अधिकांश विद्यालयों में सामाजिक गतिविधियाँ सह-पाठ्यक्रमीय कार्यों तक सीमित रह जाती हैं, जिनमें सभी विद्यार्थियों की समान भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पाती। साक्षात्कार एवं समूह चर्चाओं से यह तथ्य सामने आया कि विद्यार्थियों की सामाजिक सहभागिता मुख्यतः विद्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलकूद, राष्ट्रीय पर्वों एवं स्वच्छता अभियानों तक सीमित है। इन गतिविधियों में भागीदारी अक्सर चयनित विद्यार्थियों तक केंद्रित रहती है, जबकि बहुसंख्यक विद्यार्थी दर्शक की भूमिका में बने रहते हैं। इससे सामाजिक सहभागिता का उद्देश्यपूर्ण विकास बाधित होता है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली, समयाभाव, पाठ्यक्रमीय दबाव तथा संसाधनों की कमी सामाजिक सहभागिता को सीमित करने वाले प्रमुख कारक हैं। शिक्षकों द्वारा सामाजिक गतिविधियों को अकादमिक सीख से जोड़ने के प्रयास अपेक्षाकृत कम देखे गए। इसके अतिरिक्त, अभिभावकों की परीक्षा-उन्मुख मानसिकता भी विद्यार्थियों की सामाजिक भागीदारी को सीमित करती है। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रयोग के बावजूद सामाजिक सहभागिता का अधिकांश स्वरूप आभासी एवं व्यक्तिगत होता जा रहा है, जिससे प्रत्यक्ष सामाजिक संपर्क में कमी देखी जा रही है। इस प्रकार, वर्तमान स्थिति यह संकेत देती है कि सामाजिक सहभागिता की अवधारणा तो स्वीकार्य है, किंतु उसे संरचित, समावेशी एवं नीति-संगत रूप में विकसित किए जाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सामाजिक सहभागिता को शिक्षा के एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में स्थापित करती है तथा विद्यार्थियों को सक्रिय, संवेदनशील और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बनाने पर बल देती है। नीति में अनुभवात्मक अधिगम, सेवा-अधिगम, समूह गतिविधियों तथा विद्यालय–समुदाय सहभागिता को सामाजिक विकास के प्रभावी माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है। तथापि, प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नीति में उल्लिखित सिद्धांतों और विद्यालयों में उनके व्यावहारिक क्रियान्वयन के मध्य एक स्पष्ट अंतर विद्यमान है। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक सहभागिता की गतिविधियाँ असंगठित, अवसर-आधारित तथा सीमित सहभागिता तक ही केंद्रित हैं। जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सहभागितामूलक और निरंतर सामाजिक अधिगम की परिकल्पना करती है, व्यवहार में सामाजिक गतिविधियाँ पाठ्यक्रम के पूरक न होकर अतिरिक्त दायित्व के रूप में देखी जाती हैं। इससे विद्यार्थियों में नीति द्वारा अपेक्षित सामाजिक दक्षताओं का विकास पर्याप्त रूप से नहीं हो पाता। नीति द्वारा प्रतिपादित बहुविषयक दृष्टिकोण एवं समग्र मूल्यांकन प्रणाली का भी विद्यालय स्तर पर सीमित प्रयोग देखा गया। सामाजिक सहभागिता को शैक्षणिक अधिगम से जोड़ने तथा उसके मूल्यांकन की स्पष्ट व्यवस्था के अभाव में विद्यार्थी इन गतिविधियों को

गौण मानते हैं। इसके अतिरिक्त, परीक्षा-केंद्रित शिक्षण पद्धति राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शिक्षार्थी-केंद्रित अवधारणा के विपरीत प्रतीत होती है। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रयोग को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक अवसर के रूप में देखती है, किंतु अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म सामाजिक सहभागिता को बढ़ाने की बजाय कई बार उसे आभासी और सीमित संवाद तक संकुचित कर देते हैं। इससे प्रत्यक्ष सामाजिक अंतःक्रिया में कमी देखी जाती है।

इस प्रकार, वर्तमान स्थिति यह दर्शाती है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सामाजिक सहभागिता हेतु एक सशक्त वैचारिक ढाँचा प्रदान करती है, परंतु उसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए विद्यालय स्तर पर संरचित रणनीतियों, शिक्षक प्रशिक्षण तथा मूल्यांकन सुधारों की नितांत आवश्यकता है।

सामाजिक सहभागिता की चुनौतियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सामाजिक सहभागिता को शिक्षा का एक अनिवार्य घटक मानती है, तथापि उच्च माध्यमिक स्तर पर इसके प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक अवरोध और चुनौतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। प्रस्तुत गुणात्मक अध्ययन में निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियाँ उभरकर सामने आई हैं—

1. परीक्षा-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परीक्षा एवं अंक-आधारित मूल्यांकन को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक सहभागिता, समूह कार्य एवं सामुदायिक गतिविधियाँ द्वितीयक स्थान पर चली जाती हैं, जो NEP 2020 की समग्र एवं शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टि के विपरीत है।

2. पाठ्यक्रमीय दबाव एवं समयाभाव

उच्च माध्यमिक स्तर पर विस्तृत पाठ्यक्रम और सीमित समय के कारण शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को सामाजिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाता। सामाजिक सहभागिता को अकसर अतिरिक्त गतिविधि मान लिया जाता है, न कि अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग।

3. शिक्षक प्रशिक्षण एवं जागरूकता की कमी

NEP 2020 के सिद्धांतों के अनुरूप सामाजिक सहभागिता आधारित शिक्षण विधियों पर शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिल पाया है। परिणामस्वरूप शिक्षक सामाजिक गतिविधियों को योजनाबद्ध रूप में पाठ्यक्रम से जोड़ने में असमर्थ रहते हैं।

4. **संसाधनों एवं संरचना का अभाव**

कई विद्यालयों में आवश्यक भौतिक, वित्तीय एवं मानव संसाधनों की कमी सामाजिक सहभागिता को सीमित करती है। सामुदायिक परियोजनाओं, क्लब गतिविधियों एवं सेवा-अधिगम कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त ढाँचे का अभाव स्पष्ट रूप से देखा गया।

5. **समावेशन में व्यावहारिक कठिनाइयाँ**

यद्यपि NEP 2020 समानता एवं समावेशन पर बल देती है, तथापि व्यवहार में सभी विद्यार्थियों की समान सहभागिता सुनिश्चित नहीं हो पाती। वंचित वर्ग, ग्रामीण पृष्ठभूमि या कम आत्मविश्वास वाले विद्यार्थी प्रायः सामाजिक गतिविधियों से दूर रह जाते हैं।

6. **अभिभावकों की परीक्षा-उन्मुख मानसिकता**

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि कई अभिभावक सामाजिक सहभागिता को शैक्षणिक सफलता के लिए कम उपयोगी मानते हैं। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों की सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी को सीमित करता है।

7. **डिजिटल निर्भरता और प्रत्यक्ष संवाद में कमी**

डिजिटल तकनीक के बढ़ते प्रयोग ने एक ओर अवसर प्रदान किए हैं, तो दूसरी ओर विद्यार्थियों में प्रत्यक्ष सामाजिक संपर्क और समूह सहभागिता में कमी भी उत्पन्न की है, जो सामाजिक कौशल के विकास में बाधक है।

<u>सामाजिक सहभागिता बढ़ाने हेतु भविष्य की रणनीतियाँ</u>

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रतिपादित दृष्टिकोण को प्रभावी रूप से लागू करने हेतु उच्च माध्यमिक स्तर पर सामाजिक सहभागिता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित भविष्य उन्मुख रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं—

1. **सामाजिक सहभागिता को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाना**

NEP 2020 के अनुरूप सामाजिक गतिविधियों को केवल सह-पाठ्यक्रमीय न मानकर उन्हें औपचारिक पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन प्रणाली से जोड़ा जाना चाहिए। परियोजना कार्य, सामुदायिक अध्ययन और सेवा-अधिगम को विषयवस्तु के साथ समन्वित किया जाए।

2. **अनुभवात्मक एवं सेवा-अधिगम को प्रोत्साहन**

विद्यालय स्तर पर Service Learning Projects, जैसे—स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय समस्याओं पर कार्य, वृद्धजन सहायता आदि को अनिवार्य रूप से लागू किया जाए। इससे विद्यार्थी समाज से प्रत्यक्ष रूप से जुड़कर सीख सकेंगे।

3. **शिक्षक प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण**

NEP 2020 की प्रभावी क्रियान्विति के लिए शिक्षकों को सामाजिक सहभागिता आधारित शिक्षण विधियों, समूह अधिगम तथा सामुदायिक परियोजनाओं के संचालन हेतु नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना आवश्यक है।

4. **विद्यालय–समुदाय सहभागिता को सुदृढ़ करना**

विद्यालयों और स्थानीय समुदायों के बीच सहयोग स्थापित कर विद्यार्थियों को स्थानीय सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नागरिक गतिविधियों में भागीदारी का अवसर दिया जाए। इससे सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होगी।

5. **समावेशी एवं सहभागी वातावरण का निर्माण**

नीति के समानता एवं समावेशन सिद्धांत के अनुरूप यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी विद्यार्थी—लिंग, वर्ग, क्षेत्र या क्षमता भेद से मुक्त होकर—सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लें।

6. **मूल्यांकन में सामाजिक सहभागिता को स्थान देना**

सामाजिक सहभागिता, सहयोगात्मक कार्य, नेतृत्व एवं नागरिक व्यवहार को समग्र मूल्यांकन (Holistic Assessment) का हिस्सा बनाया जाए, जिससे विद्यार्थियों की सहभागिता को औपचारिक मान्यता मिले।

7. **डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का संतुलित उपयोग**

NEP 2020 द्वारा सुझाए गए डिजिटल संसाधनों का उपयोग ऑनलाइन सामाजिक अभियानों, वर्चुअल समूह परियोजनाओं एवं सहयोगात्मक मंचों के माध्यम से किया जाए, साथ ही प्रत्यक्ष सामाजिक संपर्क को भी प्राथमिकता दी जाए।

निष्कर्ष (Findings / Conclusion)

प्रस्तुत गुणात्मक अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में सामाजिक सहभागिता के विकास हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक व्यापक और सुदृढ़ वैचारिक आधार प्रदान करती है। नीति में प्रतिपादित

समग्र विकास, अनुभवात्मक एवं सहभागितामूलक अधिगम, मूल्य-आधारित शिक्षा तथा विद्यालय–समुदाय सहभागिता जैसे सिद्धांत सामाजिक सहभागिता को शिक्षा का एक अनिवार्य घटक मानते हैं।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश विद्यालयों में सामाजिक सहभागिता की गतिविधियाँ सीमित, असंगठित तथा अवसर-आधारित हैं। सामाजिक गतिविधियों को प्रायः सह-पाठ्यक्रमीय माना जाता है और उन्हें औपचारिक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया से पर्याप्त रूप से नहीं जोड़ा गया है। परीक्षा-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था, समयाभाव, संसाधनों की कमी तथा शिक्षक प्रशिक्षण के अभाव के कारण सामाजिक सहभागिता अपेक्षित स्तर तक विकसित नहीं हो पा रही है। इसके अतिरिक्त, यह भी पाया गया कि सभी विद्यार्थियों की समान भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पाती, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक समावेशन और सहभागिता के उद्देश्य पूर्ण रूप से साकार नहीं हो पाते।

विवेचना (Discussion / Interpretation)

इन निष्कर्षों की विवेचना करने पर यह स्पष्ट होता है कि नीति और व्यवहार के मध्य एक स्पष्ट अंतर विद्यमान है। यद्यपि NEP 2020 सामाजिक सहभागिता को शिक्षार्थी-केंद्रित और समग्र शिक्षा का आधार मानती है, परंतु विद्यालय स्तर पर इसका क्रियान्वयन अभी भी पारंपरिक, परीक्षा-प्रधान दृष्टिकोण से प्रभावित है। विवेचना से यह संकेत मिलता है कि सामाजिक सहभागिता को पाठ्यक्रम से पृथक गतिविधि के रूप में देखने की प्रवृत्ति NEP 2020 की मूल भावना के विपरीत है। नीति में सुझाए गए अनुभवात्मक अधिगम, सेवा-अधिगम और विद्यालय–समुदाय सहभागिता के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु शिक्षकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा संस्थागत सहयोग की आवश्यकता है। इसके साथ ही, मूल्यांकन प्रणाली में सामाजिक सहभागिता को स्थान न दिए जाने से विद्यार्थियों की रुचि एवं प्रतिबद्धता प्रभावित होती है। अतः यह विवेचित किया जा सकता है कि जब तक सामाजिक सहभागिता को संरचित, समावेशी और मूल्यांकन-समर्थित रूप में लागू नहीं किया जाएगा, तब तक NEP 2020 के उद्देश्यों की पूर्ण प्राप्ति संभव नहीं होगी।

संदर्भ सूची

- शर्मा, आर. के. (2019). माध्यमिक शिक्षा में सामाजिक सहभागिता का शैक्षिक महत्व. भारतीय शैक्षिक शोध पत्रिका, 4(2), 23–30।
- मिश्रा, पी., एवं तिवारी, ए. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: समग्र शिक्षा की ओर एक कदम. शिक्षा विमर्श, 6(1), 45–52।
- पांडेय, आर. (2022). अनुभवात्मक अधिगम और सामाजिक कौशल विकास. शैक्षिक चिंतन, 7(2), 33–41।
- सिंह, एन., एवं यादव, एम. (2020). किशोर विद्यार्थियों में सामाजिक सहभागिता और व्यक्तित्व विकास. भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 10(2), 88–95।

- जोशी, एस. (2021). विद्यालय–समुदाय सहभागिता: एक गुणात्मक अध्ययन. शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार, 6(3), 56–63।
- अग्रवाल, पी. (2020). मूल्य-आधारित शिक्षा और नागरिक चेतना. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 4(1), 21–28।
- वर्मा, के. एल. (2018). सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियाँ और सामाजिक विकास. शिक्षा और समाज, 3(2), 61–68।
- शुक्ला, ए., एवं सिंह, आर. (2022). उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल का विकास. समकालीन शिक्षा, 8(2), 74–82।
- त्रिपाठी, के. (2019). शिक्षा में समावेशन और सामाजिक समानता. भारतीय सामाजिक अनुसंधान, 5(1), 39–46।
- यादव, पी. (2020). शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व: एक विश्लेषण. शिक्षा विमर्श, 5(2), 50–58।
- कुमार, ए., एवं शर्मा, एस. (2023). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और डिजिटल युग में सामाजिक अधिगम. आधुनिक शिक्षा अध्ययन, 9(1), 41–49।
- चतुर्वेदी, डी. (2018). विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक मूल्यों की भूमिका. भारतीय शिक्षा शोध, 4(1), 27–34।
- सिंह, आर. (2021). माध्यमिक शिक्षा में सहभागितामूलक अधिगम. शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, 6(2), 66–73।
- मिश्रा, एस. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और विद्यार्थी सहभागिता. शिक्षा संवाद, 7(1), 19–26।
- तिवारी, आर., एवं पांडेय, एन. (2023). विद्यालयी परिवेश और सामाजिक सहभागिता. भारतीय शैक्षिक अध्ययन, 8(1), 55–62।